❋ 16 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] बाप कहते हैं– मीठे बच्चों, तुम पावन थे। नई दुनिया में सिर्फ तुम ही थे। बाकी जो इतने सब हैं वह शान्तिधाम में थे। पहले-पहले हम पावन थे और बहुत थोड़े थे फिर नम्बरवार मनुष्य सृष्टि वृद्धि को पाती है।

2] बाबा ने समझाया है 4 युग होते हैं, पांचवा यह छोटा-सा लीप संगमयुग है। इसकी आयु छोटी है। बाप कहते हैं मैं इनकी वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करता हूँ, बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में।

3] भगवान् एक है, जरूर वही पुरानी दुनिया को नया बनायेंगे। फि नये को पुराना कौन बनाता है? रावण क्योंकि रावण ही देह-अभिमानी बनाते हैं। दुश्मन को जलाया जाता है, मित्र को नहीं जलाया जाता है। सर्व का मित्र एक ही बाप है जो सर्व की सद्गति करते हैं। उनको सब याद करते हैं क्योंकि वह है ही सबको सुख देने वाला। तो जरूर दु:ख देने वाला भी कोई होगा। वह है 5 विकारों रूपी रावण। आधाकल्प रामराज्य, आधाकल्प रावण राज्य।

4] स्वास्तिका निकालते हैं ना। इसका भी अर्थ बाप समझाते हैं। इसमें पूरा चौथा होता है। जरा भी कम जास्ती नहीं। यह ड्रामा बड़ा एक्यूरेट है। कोई समझते हैं हम इस ड्रामा से निकल जायें, बहुत दु:खी हैं इससे तो जाकर ज्योति ज्योत समायें वा ब्रह्म में लीन हो जायें। लेकिन कोई भी जा नहीं सकता।

5] तुम बच्चों को पता नहीं हैं कि बाबा कैसे पावन बनायेंगे। जब तक बनावे नहीं तब तक क्या जानें। यह भी तुम समझते हो आत्मा छोटा सितारा है। बाप की छोटा सितारा है। परन्तु वह ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है। तुमको भी आप समान बनाते हैं। यह ज्ञान तुम बच्चों को है जो तुम फिर सबको समझाते हो।

6] तुमने बुलाया और मैं बिल्कुल पूरे टाइम पर आया। हर 5 हजार वर्ष बाद मैं अपने समय पर आता हूँ। यह किसको भी पता नहीं है। शिवरात्रि क्यों मनाते हैं? उसने क्या किया? किसको भी पता नहीं है इसलिए शिवरात्रि की हॉली डे आदि कुछ नहीं करते हैं। और सबकी हॉली डे करते हैं लेकिन शिवबाबा आते हैं, इतना पार्ट बजाते हैं, उनका कोई को पता नहीं पड़ता। अर्थ ही नहीं जानते। भारत में कितना अज्ञान है।

❋ योग-

1] बाप पहले-पहले तुमको आत्म-अभिमानी बनाते हैं। पहले-पहले याह शब्क (पाठ) देते हैं– बच्चे, अपने को आत्मा समझो, बाप को याद करो। इतना तुमको याद कराता हूँ, तुम फिर भी भूल जाते हो ! भूलते ही रहेंगे जब तक ड्रामा का अन्त आये। अन्त में जब विनाश का समय होगा तब पढ़ाई पूरी होगी फिर तुम शरीर छोड़ देंगे।

❋ धारणा-

1] देही-अभिमानी बन बाप को बहुत प्यार से याद करना है। आत्माओं को परमात्मा बाप का प्यार मिलता है, इस संगमयुग पर। इसको कल्याणकारी संगम कहा जाता है, जबकि बाप और बच्चे आकर मिलते हैं।

2] जहाँ अभिमान है वहाँ प्रसन्नता नहीं रह सकती, इसलिए अभिमान मुक्त बन सदा प्रसन्नता का अनुभव करो।

❋ सेवा-

1] रॉयल रूप की इच्छा का स्वरूप नाम, मान और शान है। जो नाम के पीछे सेवा करते हैं, उनका नाम अल्पकार के लिए हो जाता है लेकिन ऊंच पद में नाम पीछे हो जाता है क्योंकि कच्चा फल खा लिया। कई बच्चे सोचते हैं कि सेवा की रिजल्ट में मेरे को मान मिलना चाहिए। लेकिन यह मान नहीं अभिमान हैं।